राम कथा साहित्य में गौण पात्रों का अनुशीलन

संपादन

हिन्दी विभाग

स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

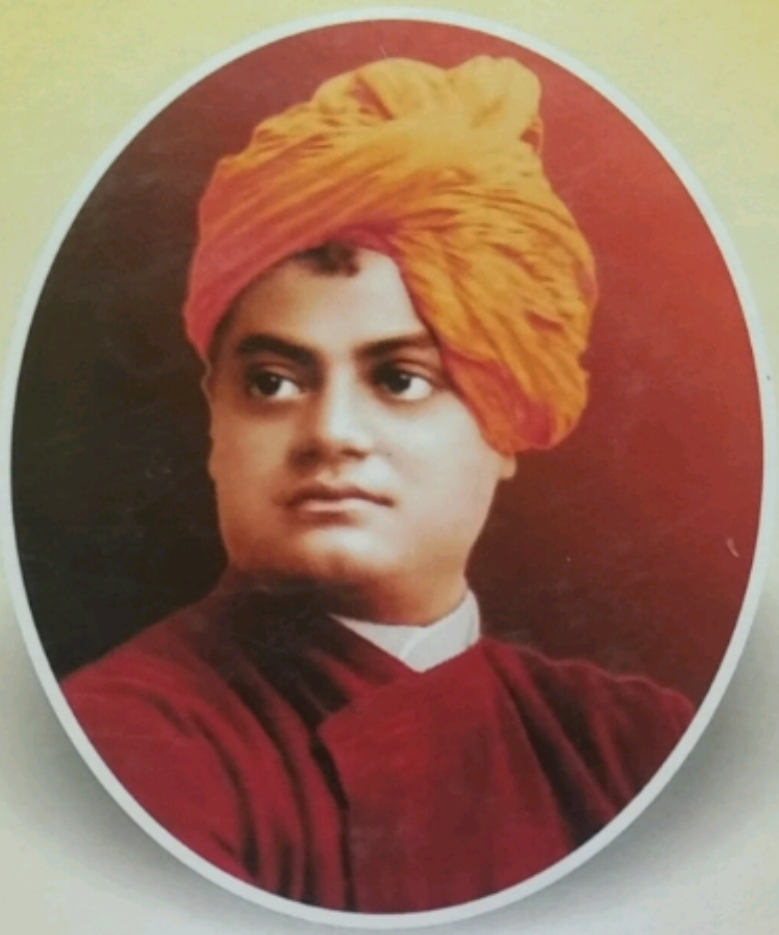

ISBN No.: 978-81-89740-78-8

12. विभीषण की शरणागति 66
डॉ. किरन आर्या
13. रामकथा के गौण नारी पात्र और उनकी अभिनव अभिव्यक्ति 71
डॉ. प्रतिभा तिवारी
14. अंगद का दृढ़ संकल्प 79
डॉ. सरिता जैन
15. धर्म–निरपेक्ष कैकेयी की आग्रहशीलता 81
डॉ. छाया चौकसे
16. लोक हित कारिणी कैकेयी 86
डॉ. विवेकानंद उपाध्याय
17. रामचरित मानस की तारा और मन्दोदरी 90
डॉ. अर्चना चतुर्वेदी
18. तपस्वी भरत का अलौकिक चरित्र 93
बिन्दु दुबे
19. तारा की समर्पण भावना 99
किरन तिवारी
20. धर्म निरपेक्ष कैकेयी 102
श्री कीरत सिंह पटेल
21. राजनयिक शत्रुघ्न 104
श्रीमति नीता बुदोलिया
22. त्याग की प्रतिमूर्ति सुमित्रा 108
कु. श्वेता विश्वकर्मा
23. त्यागी राम कथा की रानियाँ 114
तनु बोलिया

विभीषण की शरणागति

डॉ. किरन आर्या
असि. प्राफेसर, संस्कृत विभाग
डॉ. हरिसिंह गौर वि.वि. सागर

बाल्मीकि रामायण उच्चकोटि का महाकाव्य है और संस्कृत वाङ्मय का आदिकाव्य है। महर्षि बाल्मीकि ने श्रीराघवेन्द्र के जीवन चरित के माध्यम से उसमें भारतीय जीवन, दर्शन, धर्म और संस्कृति की प्रतिष्ठा की है। वैदिक सनातन धर्म और संस्कृति का भव्य एवं जागरूक आदर्श प्रस्तुत किया गया है, जीवन को सुन्दर सफल और आदर्श बनाने के लिए जिन मान्यताओं की अपेक्षा है, जिन उत्कृष्ट सद्गुणों–त्याग, बलिदान, संयम, विवेक, अनुशासन आदि की उपादेयता है जिस कार्यकौशल की स्पृहणीयता है उन सबों का समावेश पुण्यलोक श्रीरामचन्द्र जी के चरित द्वारा विशद रूप से प्रस्तुत किया गया है। मानव जीवन के विविध पक्षों की प्रतिष्ठा की गई है। फलस्वरूप इस ग्रन्थरत्न को भारत ही नहीं अपितु विश्व में बड़े सम्मान एवं आदर के साथ देखा जाता है।

बाल्मीकि रामायण एक विशाल ग्रन्थ है जो ऐतिहासिक आख्यानों, उपाख्यानों राजवंश के वर्णनों, भौगोलिक प्रसंगों, श्रुतियों के साहित्यिक वर्णनों एवं समुद्र, नदी, पर्वत, वन आदि के वर्णनों से भरा पड़ा है। उससे उचित रूप से कथाभाग का चयन करना तथा उपस्थान करना कठिन कार्य है।

बाल्मीकि रामायण से लेकर के संसार की अनेक रामायणों में एवं पुराण आख्यानों में विभीषण के विषय में वर्णन आया है। उनकी बुद्धिमत्ता कौशल तथा सत्यवादिता, निष्पक्षता के लिए वे एक उच्च कोटि के सन्त की तरह थे। सम्पूर्ण जीवन में अपनी सात्विकता के कारण वे राम के विषय में तथा राम दर्शन के लिए प्रयासरत रहे। राक्षस कुल में उत्पन्न होने के

ISBN No.: 978-81-89740-78-8

वावजूद भी कभी न्याय और सत्य का दामन नहीं छोड़ा। विचारों की दृष्टि से लंका में केवल दो नाम ही प्रमुखता के पटल पर दिग्दर्शित थे जिसपे पहला नाम विभीषण तथा दूसरा नाम नाना माल्यवान का था।

विश्व में सबसे अधिक हिन्दी का पठनीय धर्मग्रन्थ तुलसीकृत रामचरित मानस, उनके जीवन के अनेक प्रसंगों को उद्घाटित करता है जो मानवीय जीवन के जीने की कला को पूर्ण तथा विकसित करता है। विभीषण का जीवन जितना श्वेत था मन निर्मल था उतना ही उनके जीवन को लंका में रहकर रावण तथा उनके पुत्र पौत्रों द्वारा काठिन्यमय बना दिया गया। फिर भी मन में एक विश्वास की ज्योति थी कि कभी तो राम मेरे इष्ट आकर के मेरे संकटों का हरण करेंगे विभीषण जैसे पात्र से यह शिक्षा प्राप्त होती है कि मानवीय जीवन यदि संकट में हो तो भी अपने इष्ट के प्रति विश्वास को छोड़ना नहीं चाहिये ये सारी बातें विभीषण ने स्वयं हनुमान से प्रथम दर्शन में ही बता दी थीं। यथा–

अब मोहि भा भरोस हनुमन्ता।
बिन हरि कृपा मिलहिं नहिं सन्ता।।

तथा–

जिमि दशनन में जीभ बिचारी। आदि उदाहरण प्रमाण हैं। विभीषण अपनी जन्मभूमि को छोड़ना किसी के लिये भी सरल कार्य नहीं होता, राजधानी तथा स्वयं के परिवार जनों का त्याग करना सामान्य हृदय के बस की बात नहीं होती किन्तु मानस के अनुसार जब विभीषण के जीवन ये क्षण आये तो इन दुःख क्षणों में विभीषण की अखण्ड भक्ति तथा मन अपने इष्ट के प्रति समर्पित दिखा और विवश होकर तुलसी के शब्दों में लिखा गया–

जिन पावन की पादुकन भरत रहेमन लाय।
सु पद आज विलाकि हहुँ इन नैनन अब जाय।।

ISBN No.: 978-81-89740-78-8

अतः इससे ज्ञात होता है कि यदि माया से मन को हटा दिया जाये तो एकमात्र इष्ट के चरण हैं जहाँ मन स्वतः अपने स्थान को ढूँढ़ लेता है। और मुक्ति की ओर पथ को प्रशस्त करने लगता है। विभीषण की भक्ति के साथ राम की भक्त वत्सल्ता का भी ऐसा प्रमाण मिलता है जो किसी भी भक्त का मान बढ़ा दे। जब विभीषण जैसा भक्त राम सदृश भक्तवत्सल के सन्निकट पहुँचता है तो भावविह्वल होने में भी क्षणभर नहीं लगा जिसे महर्षि बाल्मीकि ने आदिकाल जैसे ग्रन्थ में उद्घृत किया–

आर्त्तो वा यदि वा दृप्तः परेषां शरणागतः।
अपि प्राणान् परित्यज्य रक्षितव्यः कृपात्मनः।
विनष्टः पश्यतो यस्यारक्षितः शरणागतः।
आदाय सृकृतं तस्य सर्व गच्छेदरक्षितः।
एवं दोषो महानत्त प्रपन्नानामरक्षणे।
सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति न याचते।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम।।(1)

जब श्रीराम ने असीम वरूणालय को देखकर चिन्ता प्रकट की कि हमारी सेना किस प्रकार शतयोजन विस्तीर्ण समुद्र को पार करेगी? इस सम्बन्ध में सचिवगण अपना अपना विचार प्रकट कर रहे थे उसी समय लंकेश रावण को छोटा भाई विभीषण रावण से हित तथा कठोर वचन कहने के कारण अपमानित होने पर समुद्र पार जा पहुंचा, जहाँ श्रीराम और लक्ष्मण असंख्य वानर सेना के साथ विराजमान थे। विद्युत के समान चमकते और सुमेरू पर्वत के समान आकाश में स्थित विभीषण को नीचे से वानर यूथपतियों ने देखा , मेघ तथा पर्वत के समान विशालकाय, इन्द्र के वज्र के समान प्रभायुक्त आयुधों को धारण किये हुये तथा सुन्दर आभूषणों से विभूषित विभीषण को वानरों ने आकाश में देखा। विभीषण के चारों पराक्रमी

ISBN No.: 978-81-89740-78-8

संचिव भी अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित तथा विविध आभूषणों से विभूषित थे। बुद्धिमान वानरराज सुग्रीव उन पांचों व्यक्तियों को देखकर अन्य वानरों के साथ चिंतित हो उठे। कुछ सोचने के बाद वह बोले– विविध आयुधों से विभूषित यह कोई राक्षस है, जो अपने चार साथियों के साथ हम लोगों को मारने के लिये यहाँ आया है।

सुग्रीव के वचन सुनकर वानरों ने बड़े–बड़े साल–वृक्ष और शिलायें हाथ में लेकर सुग्रीव से कहा– हे राजन् ! आप हमें इस दुरात्मा को मारने की शीघ्र आज्ञा प्रदान करें। हम लोग इस अल्पबल राक्षस को मारकर अभी नीचे गिरा देगें। इधर वानर परस्पर इस प्रकार बातें कर रहे थे, उधर विभीषण समुद्र के उत्तर तट पर पहुंच कर आकाश में ही रूक गया। सुग्रीव आदि यूथपतियों को देखकर बुद्धिमान विभीषण के बड़े उच्च स्वर से कहा– राक्षसों का राजा रावण महान् दुराचारी है। मैं उसी का छोटा भाई हूँ। मेरा नाम विभीषण है। जटायु को मारकर जनस्थान से सीता जी को ही पापी हर लाया है। सीता जी विवश तथा दीन हो राक्षसियों के मध्य कारागार में पड़ी हुई कष्ट उठा रहीं हैं। राक्षसराज रावण को मैंने अनेक युक्तियों से समझाया और कहा कि– आप श्रीराम को सीता लौटा दें। किन्तु उसने मेरी बात नहीं मानी। उसके ऊपर काल मंडरा रहा है। जैसे मरणासन्न रोगों को दवा अच्छी नहीं लगती वैसे रावण को मेरी अच्छी बातें रूचिकर नहीं लगीं। उसने मुझे कठोर वचन कहे और दास के समान अपमानित किया। फलस्वरूप में पुत्र कुलआदि छोड़कर श्रीराम की शरण में आया हूँ। सब लोकों की शरणदाता महात्मा राम से आप शीघ्र जाकर निवेदन कर दें कि विभीषण आया है"। इस प्रकार के कथानक अनुसार विभीषण शरणागतवत्सल श्रीराम के शरण में आते हैं और श्रीराम द्वारा उन्हें सहर्ष सम्मान स्वीकार किया जाता है। श्रीराम कहते हैं–

हाथ जोड़कर शरण में आये हुए शत्रु की रक्षा करनी चाहिए। उत्तम पुरूष को चाहिए कि वह अपने प्राणों की बाजी लगाकर शरणागत की

ISBN No.: 978-81-89740-78-8

रक्षा करे। जो भस से, मोह से अथवा काम से शक्ति रहते शरणागत की रक्षा नहीं करता, वह पापी और लोकनिन्दित माना जाता है। शरणागत की रक्षा करने से बड़ा भारी पाप लगता है उसको स्वर्ग नहीं मिलता, अपकीर्ति होती है और उसके बलवीर्य का नाश होता है। यदि रक्षक के समक्ष शरणागत मर जाय तो उसके पुण्यों को लेकर वह परलोक चला जाता है। अतः एक बार भी जो मेरी शरण में आकर 'तुम्हारा हूँ'' इतना कह देता है मैं उसको सर्वथा निर्भय कर देता हूँ–

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च भाशते।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद् व्रतं मम।।(2)

अतः विभीषण राक्षस कुल में उत्पन्न होकर भी ईश्वर के सन्निकट होकर अपनी मुक्ति के मार्ग को ढूँढ़ लेते हैं तथा जो पद देवताओं को दर्लभ है वो प्राप्त करने मे सफल होते हैं स्पष्ट है शरणागति एवं भग्वत भक्ति किसी कुल योनि अथवा वंश में निहित नहीं है बल्कि इस चराचर में किसी के लिये भी सुलभ है आवश्यकता है तो विश्वास, दृढ़ता, सत्कर्म तथा सद्धर्म जैसे झरोखों की जिससे हम स्वयं को पहचान सकें आत्मावलोकन कर सके।

संदर्भ सूची :–

1. बाल्मीकि रामायण
2. बाल्मीकि रामायण युद्ध का सर्ग–18 श्लोक 33

ISBN No.: 978-81-89740-78-8